शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 13
Issue 1&2
15 July 2022

भारत में लेखन कला की प्राचीनता : साहित्यिक स्रोतों के आलोक में

बीज शब्द :

धरती पर मानव का अस्तित्व अब तक के ज्ञात स्त्रोतों से लगभग दस लाख वर्ष पुराना है। अपने लम्बे कालखण्ड में मनुष्य ने क्रमिक विकास के अनेक युग निर्मित किये और युग-दर-युग विकास के नए कीर्तिमान बनाता गया। लगभग दस हजार साल पहले नवपाषाण युग की शुरुआत हुई। यह युग मानव सभ्यता के विकास की आधारशिला के रूप में स्थापित है। सूक्ष्म और सुन्दर पाषाणोपकरण इस युग की विशेषता थी। कृषि की खोज एवं उसका प्रारम्भ तथा गाँवों की स्थापना ने इस युग के मानव को अन्य प्राणियों से अलग बनाया तथापि इस युग में कुछ अंक संकेत अथवा भाव संकेत के अलावा लेखन कला का कोई पुरातात्त्विक प्रमाण प्राप्त नहीं होता।

*****

डॉ. पद्मजा सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास,
पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर

भारत में लेखन कला की प्राचीनता : साहित्यिक स्रोतों के आलोक में

ताम्र युग के शुरू होते-होते नगर एवं राज्य का विकास अधिशेष उत्पादन आरम्भिक बाजार ने मनुष्य को लेखन कला अर्थात् लिपियों की आवश्यकता का एहसास कराया और आरम्भिक दौर की बहुत सारी लिपियाँ प्रकाश में आयीं। प्राचीन भारत की हड़प्पा सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यताएँ, मिस्र तथा चीन की सभ्यताओं में लिपि के उद्भव और उसका किंचित् विकास दिखाई देता है। इनमें से अनेक लिपियाँ अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी हैं। ये लिपियाँ अधिकांशत: चित्र-संकेतों तथा भाव चित्रों पर आधारित थीं। वर्णमालात्मक लिपियों का उद्भव एवं विकास इन सभ्यताओं में अभी तक प्रमाणित नहीं हैं।

भारत में लेखनकला के पुरातात्त्विक प्रमाण पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व से प्राप्त होने लगते हैं। इनमें एरण मुद्रा[2], भट्टिप्रोलू अवशेष मंजूश, द्राविडी अभिलेख[3], तक्षशला मुद्रा लेख[4], महास्थान प्रस्तर अभिलेख[5], सोहगौरा ताम्र पत्र अभिलेख[6], पिपरहवा बौद्ध कलश अभिलेख[7], बड़ली अभिलेख[8], एक महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक प्रमाण हैं।

पुरातात्त्विक साक्ष्यों के अन्तर्गत प्राप्त अभिलेखों की लिपियों के आधार पर स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि इन अभिलेखों के अस्तित्व में आने से पूर्व भारत में लेखन कला का उद्भव हो चुका था। भारत में लिपियों का यह उद्भव एवं उनकी प्राचीनता तय करने के लिए साहित्यिक स्रोतों की परम्परा में लिपियों के उद्भव के श्रेय का आधार भी धार्मिक है। भारत की साहित्यिक परम्परा में लिपि के उद्भव का श्रेय ब्रह्मा को दिया गया है।[9]

जैन ग्रन्थ समवायाङ्ग सूत्र, पण्णावणा सूत्र[10] में भी नारद स्मृति का उल्लेख दोहराया गया है। चीनी यात्री युवांग-चांग भी इस कथा का उल्लेख करता है।[11] 580 ईसापूर्व की बादामी में ब्रह्मा की एक मूर्ति मिली है। इनके एक हाथ में ताड़पत्र है।[12] ब्रह्मा से लिपि की उत्पत्ति की इस कथा को आधार मानकर ही प्राचीन भारतीय लिपि को ब्राह्मी लिपि की संज्ञा दी गयी है। उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय साहित्य में सामान्यत: विकासक्रम को दैवी उत्पत्ति सिद्धान्त के आलोक में ही उल्लिखित किया गया।

प्राचीन भारतीय साहित्य के अध्ययन और अनुशीलन के आधार पर यह तथ्य प्रमाणित है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों ने अपने द्वारा की गयी किसी भी खोज या उपलब्धि को ईश्वर-कृपा मानते थे और उन्होंने स्वयं को श्रेय देने का प्रयत्न नहीं किया। वैदिक ऋचाएँ, औपनिषदिक ज्ञान परम्परा और अनेक ऐसे अनाम लिखित विपुल समृद्ध संस्कृत साहित्य इस बात के प्रमाण हैं। सम्भवत: यही कारण है कि प्राचीन भारतीय लिपि के उद्भव और विकास का श्रेय भी भारतीय ऋषियों ने ब्रह्मा को दे दिया। किन्तु इससे इतना स्पष्ट है कि भारत में लिपि एवं लेखन कला का उदभव एवं विकास पाँचवीं शताब्दी से बहुत पहले हो चुका था। इस निष्कर्ष को पुष्ट करने हेतु लिपि और लेखन कला के सन्दर्भ में प्राप्त साहित्यिक स्रोतों की समीक्षा समीचीन है।

संस्कृत भाषा का अति प्रतिष्ठित व्याकरण ग्रन्थ पाणिनि की अष्टाध्यायी है। विद्वानों द्वारा इसे पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व की रचना माना जाता है। अष्टाध्यायी में लेखन कला के परिचायक शब्दों का प्रचुरता के साथ उल्लेख हुआ है।उदाहरणार्थ अष्टाध्यायी में 'लिख', 'लिबि', 'लिपिकर' इत्यादि शब्द प्राप्त होते हैं।[13] अष्टाध्यायी के 'यवनानि' शब्द का उल्लेख है जिसकी टीका करते पतंजलि तथा कात्यायन इसे यवन लिपि मानते हैं।[14] पाणिनि ने अपने एक अन्य महत्त्वपूर्ण सूत्र में ग्रन्थ शब्द का भी उल्लेख किया है जो निश्चित रूप से पुस्तक का ही पर्याय है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती अनेक व्याकरण शास्त्रीयों के नाम का उल्लेख किया है। स्पष्ट है कि किसी भी भाषा के व्यवस्थित व्याकरण शास्त्र का विकास तभी होता है जब भाषा और लिपि का प्रयोग साथ-साथ चल रहा हो।

पाणिनि के पूर्व के ग्रन्थों में यास्क का 'निरुक्त' उल्लेखनीय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में औदुम्बरायण, शतबलाक्ष, मौदगल्य, शाकूपूर्णि, शाकटायन, कौत्स, गार्ग्य, गालव, शाकल्य आदि व्याकरणाचार्यों के नाम प्राप्त होते हैं। स्पष्ट है कि व्याकरण शास्त्र एवं व्याकरण साहित्य की रचना यास्क से भी पूर्व हो चुकी थी।[15] प्राचीनतम बौद्ध ग्रन्थों में भी लेखन कला के विकसित होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। बौद्ध जातकों में लेखन कला के अनेक सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। इन जातक ग्रन्थों में समाज के जिस सामान्य स्वरूप का चित्रण मिलता है वह छठीं शताब्दी ईसापूर्व का भी पूर्ववर्ती प्रतीत होता है। कटाहक जातक में कहा गया है कि काशी में एक झूठे व्यक्ति ने जाली पत्र दिखाकर अपने आपको सेठ-पुत्र घोषित किया था। महासुत्त सोम जातक से ज्ञात होता है कि तक्षशिला के एक अध्यापक ने अपने पुराने विद्यार्थियों का एक पत्र लिखा था। महावग्ग के एक सन्दर्भ में लिखित चोर का उल्लेख मिलता है।[16]

उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थ एवं परवर्ती वैदिक संहिताओं का अनुशीलन भी भारत में लेखन कला की प्राचीनता को क्रमश: पूर्व की ओर ले जाते हैं। छान्दोग्योप निषद् में अक्षर, शब्द का उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में वर्ण एवं मात्र की चर्चा की गयी है। ऐतरेय आरण्यक में स्वर एवं व्यंजन का भेद बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण में एकवचन, बहुवचन तथा

तीनों लिंगों के भेद का विवेचन मिलता है।[17]

अथर्ववेद के एक सन्दर्भ में कही गयी बात के लिखे जाने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।[18] न केवल अथर्ववेद अपितु ऋग्वेद के काल तक भारत में लेखनकला के उद्भव के सूत्र दिखाई पड़ते हैं। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, क्षेत्रशचन्द्र चट्टोपाध्याय एवं विश्वम्भर शरण पाठक जैसे विद्वानों ने भारत में लेखन कला की प्राचीनता ऋग्वेद में उल्लिखित तथ्यों के आधार पर पूर्व वैदिक युग तक रेखांकित करते हैं।[19] गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने हमारा ध्यान ऋग्वेद के छन्दों की ओर आकृष्ट किया है। उनका मानना है कि छन्दों का वर्गीकरण अक्षरों एवं मात्रओं की संख्या के आधार पर ही किया जाता था। लेखन कला के ज्ञान के बिना इन छन्दों का विन्यास तथा इनमें विभेद करना सम्भव नहीं था।[20] ऋग्वेद में गायत्री, अनुष्टुभ, वृहती, विराज, त्रिष्टुभ जगती इत्यदि छन्दों के नाम मिलते हैं।[21] ऋग्वेद में राजा सावर्णि द्वारा अष्टकर्णी एक सहस्र गायों के दान देने का उल्लेख है। उल्लेखनीय है कि यह सब लिपि और लेखन कला के बगैर सम्भव नहीं था। विश्वम्भर शरण पाठक[22] ने ऋग्वैदिक काल में भारत में लेखन कला के उदभव को स्वीकारते हुए हमारा ध्यान ऋग्वेद के निम्न मन्त्र की ओर आकर्षित किया है-

'तिरस्रो वाच उदीरते गावो मीमन्ति धोनवः हरिरेति कनिक्रदत।
अभि ब्रह्मीरनूषत यीहवी ऋतस्य मातः ममृज्यन्ते दिवः शिशुम्।।'

प्रो. पाठक का विचार ब्राह्मी का अर्थ मूलतः वैदिक भाषा, उससे सम्बद्ध लिपि और अक्षर प्रक्रिया है। उनका कहना है कि ब्रह्मी शब्द की व्याख्या सायण ने 'ब्रह्मण प्रेरिता स्तुतयः की है। ऋग्वेद का यही ब्रह्मी वाक्य आगे चलकर ब्राह्मी वाक्य में परिवर्तित हो गया जिसकी पुष्टि महाभारत के एक सन्दर्भ से होती है। शान्ति पर्व में देवयानी ययाति से प्रश्न करते हुए कहती है-

'राजवद रूपवेषोते, ब्राह्मीवाचं विभाषच को नाम त्वं कुतश्चासि, कस्य पुत्रश्च शंसम।।'

शान्तिपर्व में ही एक सन्दर्भ में ब्राह्मी शब्द वैदिक भाषा के लिए प्रयुक्त है।[23]

उपर्युक्त सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में प्रो. पाठक मानते हैं कि वेद की भाषा को तथा इसकी लिपि को ब्राह्मी कहते थे और ऋग्वैदिक युग में भाषा एवं लिपि का उद्भव एवं विकास हो चुका था।

स्पष्ट है कि भारत में लिपि का उद्भव ऋग्वैदिक युग अर्थात् तृतीय सहस्राब्दि ईसापूर्व में हो चुका था। उल्लेखनीय है कि हड़प्पा सभ्यता एवं पूर्व वैदिक संस्कृति की समकालीनता के आलोक में उपर्युक्त निष्कर्ष को समझा जाना चाहिए। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त लिपि भी इस सन्दर्भ में एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण है।

सन्दर्भः

1. मूले, गुणाकर, भारतीय लिपियों की कहानी, पृ. 20
2. कनिंघम, क्वायन्स ऑफ एन्ज़िएण्ट इण्डिया, पृ. 101
3. ब्यूलर, इण्डियन पेलियाग्राफी, फलक-2 भाग 13-14, द्रष्टव्य- पाण्डेय राजबली, भारतीय पुरालिपि, पृ. 17
4. कनिंघम, क्वायन्स ऑफ एन्ज़िएण्ट इण्डिया, पृ. 101
5. एपिग्रेफिया इण्डिका, भाग 21, पृ. 85(इण्डियन हिस्टॉरिकल क्वायन्स, पृ. 57
6. एपिग्रेफिया इण्डिका, भाग 22, पृ. 2(इण्डियन हिस्टॉरिकल क्वायन्स, पृ. 54
7. जर्नल ऑफ रॉयल एज़ियाटिक सोसाइटी आर्फ बंगाल, पृ. 387
8. ओझा, भारतीय प्राचीन लिपिमाला, पृ. 2(राजपूताना संग्रहालय अजमेर में सुरक्षित
9. 'नाकरिष्यद्यदि ब्रह्मा लिखितं चक्षुरुत्तमम्। तत्रेयमस्य लोकस्य नाभविष्यच्छु गतिः।। (नारदस्मृतिः 4-70 'द्रष्टव्य- सेक्रेड बुक्स आर्फ द ईस्ट सीरीज, 23, पृ. 58, मनु संहिता, समवायाङ्गसूत्र, जार्ज ब्यूलर इण्डियन पेलियोग्राफी का हिन्दी अनुवाद, पृ.3 पषाणमासिके तु समये भ्रान्तिः संजायते यतः। धात्रंक्षराणि सृष्टानि पत्ररूढ़ाण्यतः पुरा।। बृहस्पति स्मृति
10. वेवर, इण्डिस स्ट्राइफेन, 16, 280, 399
11. सी-यू-की, 1, 77
12. इण्डियन एण्टीक्वेरी 6, फलक 366
13. अष्टाध्ययी, 4-3, 119(3, 2, 21
14. राव, राजवन्त, प्राचीन भारतीय लिपि, मुद्रा एवं कला, पृ. 4
15. राय, एस.एन., भारतीय पुरालिपि एवं अभिलेख, पृ. 28, 29
16. महाबग्ग, 1-45
17. राव, राजवन्त, प्राचीन भारतीय लिपि, मुद्रा एवं कला, पृ. 6
18. अथर्ववेद, 2, 3, 22
19. राव, राजवन्त, प्राचीन भारतीय लिपि, मुद्रा एवं कला, पृ. 7, 8
20. पाण्डेय राजबली, भारतीय पुरालिपि, पृ. 12, 13
21. ऋग्वेद, 10.14.16(10.132, 3-4
22. द्रष्टव्य-विश्वम्भरशरण पाठक का लेख, पण्डित सुरतिनारायण मणि त्रिपाठी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ. 58-60
23. इत्येते चतुरो वर्णाः येषां ब्राह्मी सरस्वती। विहिता ब्राह्मणाः सर्वे लोभादज्ञानता गताः।। - शान्तिपर्व, महाभारत 188-15

◆◆◆